इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ६ मार्च, २०११ को होनेवाली मुख्य परीक्षा में भी पूछे जाने की संभावना है ।

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा

पूर्व कसौटी : सत्संग प्रवीण : प्रश्नपत्र - १

जनवरी, २०११ समय : सुबह ९.०० से १२.०० कुल गुणांक : १००

केवल अनुपस्थित परीक्षार्थीओं के लिए : केवल 'बारकोड' अंकित यही एकमात्र पृष्ठ नीचे दी गई रेखा से काटकर पत्रक - A तथा पत्रक - B के साथ वापस भेजना है ।

अनुपस्थित परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका का केवल यही पृष्ठ वापस भेजना है ।

☞ **परीक्षार्थी के नाम सम्बंधित विवरण के साथ 'बारकोड' अंकित किया गया है । कृपया उस पर किसी प्रकार का नुक़सान मत कीजिए ।**

अनिवार्य : निम्न लिखित सूचना की परीक्षार्थी को अपने आप पूर्ति करनी है

परीक्षार्थी का जन्म दिन दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ वर्ष ☐☐☐☐

परीक्षार्थी का अभ्यास ....

परीक्षार्थी की उत्तर पुस्तिका पर अंकित नाम सहित अनिवार्य विवरण की सत्यता की जाँच करने के पश्चात् वर्ग निरीक्षक हस्ताक्षर करें ।

वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर ....

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१ (६)	
	२ (५)	
	३ (४)	
	४ (४)	
	५ (८)	
	६ (८)	
	७ (७)	
	८ (५)	
विभाग-१, कुल गुण		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	९ (९)	
	१० (८)	
	११ (८)	
	१२ (५)	
	१३ (८)	
विभाग-२, कुल गुण		

मोडरेशन कार्यालय के लिए	प्रश्न नंबर (गुण)	प्राप्तांक
	१४ (१५)	
विभाग-३, कुल गुण		

परीक्षक के हस्ताक्षर

....

મોડરેશન વિભાગ માટે જ

ગુણ શબ્દોમાં . . . .

ચેકર - નામ

☞ परीक्षार्थीओं को महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ :-

१. मुख्य परीक्षा के दिन वर्गखंड में उपस्थित प्रत्येक परीक्षार्थी वर्ग निरीक्षक से अपनी नामयुक्त उत्तर पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर करा लें ।

२. **बिना वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर की उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

३. दायीं ओर दिए गए अंक प्रश्न के गुण दर्शाते हैं ।

४. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । अस्पष्ट उत्तर अमान्य होंगे ।

५. मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पनों में लिखे हुए उत्तर मान्य नहि होंगे ।

६. **परीक्षार्थी केवल ब्लू या केवल काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखे । पेन्सिल से अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से लिखि गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

७. परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राईटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद गीनी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी ।

८. **परीक्षा खंड के बाहर** और अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

विभाग - १ : श्री अक्षरपुरुषोत्तम उपासना

प्र. १ निम्नलिखित किन्हीं दो विषय के संदर्भ में शास्त्र के तीन प्रमाण दीजिए ।
(संदर्भ शास्त्र का नाम और क्रमांक लिखना अनिवार्य है ।) **(६)**

१. भगवान सर्वोपरि हैं यह निष्ठा आवश्यक है ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

२. भगवान कर्ता कैसे हैं ?

३. प्रकट को जाने बिना कसर ।

४. अक्षरब्रह्म की अनंत महिमा ।

प्र. २ प्रमाण, सिद्धांत अथवा पंक्ति पर से विषय का शीर्षक दीजिए । **(५)**

उदाहरण : 'भगवान को निराकार समझने के रूप में किया गया पाप तो पंच महापापों की अपेक्षा से भी बहुत बड़ा पाप है । इस पाप का कोई भी प्रायश्चित नहीं है ।'

उत्तर : भगवान को निराकार समझने से हानि ।

१. 'ओह, यह तो जोगी (गुणातीतानंद स्वामी) की करनी है। मेरे कथन को परिवर्तित करने की शक्ति इनमें ही है ।'

.....

२. जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वत:।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥

३. 'अब उलटी गंगा नहीं बहेगी, आज तक तो गंगा उलटी बहती रही, आज ही सीधी हुई है ।'

४. बंध कीधां बीजां बारणां रे, वहेती कीधी अक्षरवाट पुरुषोत्तम प्रगटी रे ।

५. इनकी महानता आसन से नहीं है, इनकी महानता तो अनादि से है ।

प्र. ३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (४)
सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. उपासना किसे कहते हैं ?

(१) ☐ पुरुषोत्तम नारायण दिव्य हैं ।

(२) ☐ भगवान निराकार है ।

(३) ☐ भगवान प्रकट नहीं है ।

(४) ☐ दिव्य सभा में मुक्तों सहित नारायण का दर्शन करना अर्थात् भक्तों सहित भगवान की उपासना करना ।

२. भगवान को निराकार समझने से हानि ।

(१) ☐ पंच महापापों की अपेक्षा भी बहुत बड़ा पाप है । (२) ☐ पाँच जन्म तक दु:ख भुगतना पड़ेगा ।

(३) ☐ द्रोह कहलाएगा । (४) ☐ समस्त गुण दोषरूप हो जाते हैं ।

प्र. ४ निम्नलिखित किसी <u>एक</u> प्रसंग का वर्णन कर के उसका सिद्धांत लिखें । **(४)**

१. नित्यानंद स्वामी की सिद्धांतनिष्ठा की दृढ़ता ।
२. शीतलदास को निश्चय हो गया कि महाराज ही सर्वोपरि भगवान हैं ।
३. स्वरूपानंद स्वामी को महाराज ने बताया हुआ शांति का उपाय ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

सिद्धांतः .....

.....

.....

प्र. ५ किन्हीं <u>दो</u> विषयों के बारे में विवरण कीजिए । (बारह पंक्ति में) **(८)**

१. अक्षरब्रह्म : धामरूप में ।
२. गुणातीत संत की महिमा : विभिन्न शास्त्रों में ।
३. साकार स्वरूप में रुचि ।
४. भगवान को सर्वकर्ता–हर्ता जानने की आवश्यकता ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ६ निम्नलिखित किन्हीं दो के बारे में कारण लिखें । (बारह पंक्ति में) **(८)**

१. सूर्य के सामने फेंकी हुई धूल अपनी ही आँखों में पड़ती है ।
२. जो मूर्तिमान हों, वे व्यापक भी हो सकते हैं ।
३. श्रीजीमहाराज को तेजपुंज से रुचि नहीं है ।
४. अक्षरधाम अविनाशी है ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्र. ७ उपासना में क्या समझना चाहिए ? और क्या नहीं समझना चाहिए ? उसके आधार से निम्नलिखित विधानों की पूर्ति कीजिए । **(७)**

(उपासना में क्या समझना चाहिए ?)

१. श्रीजीमहाराज सदा ही अपने .....

.....

..... निर्गुण कर देते हैं ।

२. अक्षरब्रह्म भी अक्षरधाम में ..... निर्गुण कर देते हैं ।
३. श्रीजीमहाराज पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण ..... प्रकट और दिव्य हैं ।
४. परब्रह्म पुरुषोत्तम नारायण ..... हैं ।

(उपासना में क्या नहीं समझना चाहिए ?)

५. श्रीजीमहाराज के जूते, ... नहीं समझना चाहिए ।
६. मुक्तों की आत्मा ..... नहीं समझना चाहिए ।
७. अकेले पुरुषोत्तम ही .....नहीं समझना चाहिए ।

प्र. ८ टिप्पणी लिखिए । मनुष्यरूप भगवान दिव्य हैं ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

विभाग - २ : सत्संग वाचनमाला भाग - ३ और युगविभूति प्रमुखस्वामी महाराज

प्र. ९ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । **(९)**

१. ''कभी सो करोड़ मन बाजरे के छीलके लेकर उसका व्यापार करने का संकल्प होता है ?'' **अथवा**

२. ''तुम तो गाँव के प्रतिष्ठित संन्यासी तुलसीदासजी के शिष्य हो ।''

( ) कौन कहता है ? ..... किसको कहता है ? .....

कब कहता है ? .....

.....

.....

३. ''इस बार पधरावनी की भेंट अधिक आई है । '' **अथवा**

४. ''भले ही आप गरीब हैं, लेकिन आप के दर्शन से शान्ति मिलती है ।''

५. ''जो भी घटित होता है, उसमें 'मैं' का भाव छोड़कर भगवान को सर्वकर्ता मानकर, भगवान और गुरु के आश्रय में रहना ।'' **अथवा**

६. ''यह मूर्ति, हमारे सभी कर्मों की साक्षी है ।''

प्र. १० निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (नौ पंक्ति में) **(८)**

१. कुशलकुंवरबा सप्ताह में एकबार राज्य कारोबार का ध्यान रखतीं । **अथवा**

२. पर्वतभाई की बात सुनकर सभाजन सब विस्मित होकर दु:ख के भाव में डूब गये ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३. एक अबोध बालक के दु:ख में सहभागी बनकर स्वामीश्री को असीमित संतोष मिला । **अथवा**

४. दारेसलाम के हवाईअड्डे पर के अधिकारियों स्वामीश्री के चरणों में झुक गए ।

प्र. ११ निम्नलिखित विषय पर प्रमाणसर विवरण लिखिए । (बारह पंक्ति में) **(८)**

१. भादरा में लालजी भक्त को महाराज के स्वरूप में अधिक दृढ़ता से निश्चय हो गया । **अथवा**

२. आज्ञा पालक गोपालानन्द स्वामी ।

( ) .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

३. डाह्याभाई को अक्षरधाम का आनंद । **अथवा** ४. निर्विकल्प समाधि के निरंतर के अनुभवी स्वामीश्री ।

प्र. १२ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । **(५)**

१. रधुवीरजी महाराज का जन्म कब और कहाँ हुआ था ? (संवत्, तिथि)

.....

.....

२. बड़ौदा की शास्त्रचर्चा में मुक्तानन्द स्वामी ने क्या साबित कर दिया ?

३. मुक्तानन्द स्वामी को धर्मपुर भेजते वक़्त महाराज ने क्या आज्ञा दी ?

४. प्रमुखस्वामी किस के प्रमुख हैं ?

५. अंग्रेज पत्रकार के अन्तिम प्रश्न का स्वामीश्री ने क्या उत्तर दिया ?

प्र. १३ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । (८)

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहीं दिया जाएगा ।

१. मुक्तानन्द स्वामी की साहित्य रचना ।

(१) ☐ ब्रह्मसूत्र भाष्य (२) ☐ चोसठपदी

(३) ☐ सतीगीता (४) ☐ निर्णयपंचक

२. पर्वतभाई की समजदारी ।

(१) ☐ मेरे प्रभु की लीला तो देखिए ।

(२) ☐ आप सब उसको अग्निदाह दे देना, मैं तो अब वापस नहीं लौटूँगा ।

(३) ☐ आप की मूर्ति के दर्शन छोड़कर भोजन कहाँ से भाये ?

(४) ☐ मेरे इष्टदेव हैं ये संतों ।

३. प्रमुखस्वामी महाराज को पार्षदी और भागवती दीक्षा कहाँ प्रदान की ?

(१) ☐ बोचासण (२) ☐ अहमदाबाद

(३) ☐ गोंडल (४) ☐ सारंगपुर

४. वैश्विक शांति किस प्रकार संभव है ?

(१) ☐ जीवन में धर्म का अनुशासन स्वीकार किया जा सकता है ।

(२) ☐ माता-पिता को पंचांग प्रणाम किया जा सकता है ।

(३) ☐ प्रतिदिन एक दंडवत् अधिक किया जा सकता है ।

(४) ☐ आपस में सहिष्णुता अपनाई जा सकती है ।

विभाग - ३ : निबंध

प्र. १४ निम्नलिखित किसी एक विषय पर करीब ६० पंक्ति में निबंध लिखिए । **(१५)**

१. जगत को उजाला देनेवाला : हिन्दूओं का नैतिक घड़न । (स्वामिनारायण प्रकाश - नवम्बर-दिसम्बर - २००८)

२. कौटुम्बिक एकता : कचहरी या समजदारी से ? ((स्वामिनारायण प्रकाश - जून - २००८)

३. वस्त्र परिधान : भगवान स्वामिनारायण (स्वामिनारायण प्रकाश - अप्रैल - २००८)

( ) .....

पूर्व कसौटी के निबंध के लिए नीचे दी गई लींक का उपयोग करें :

http://www.swaminarayan.org/satsangexams/essays/

* * *